अभ्युत्थिताग्निपिशुनैरतिथीनाश्रमोन्मुखान् ।

पुनानं पवनोद्धूतैर्धूमैराहुतिगन्धिभिः ।।53।।

अन्वयः अभ्युत्थिताग्निपिशुनैः पवनोद्धूतैः आहुतिगन्धिभिः धूमैः आश्रमोन्मुखान्, अतिथीन् पुनानम् (आश्रमम् प्राप्तः)।

अनुवाद (वह आश्रम) जो प्रज्वलित (होम योग्य) अग्नि की सूचना देने वाले, वायु से इधर-उधर उड़ाये गए तथा हवन-सामग्री की गंध वाले धुएँ से आश्रम की ओर आते हुए अतिथियों को पवित्र कर रहा था।

टिप्पणियां

प्रस्तुत श्लोक में मुख्य वाक्य है.''**अतिथीन् धूमैः पुनानम्**'', तृतीया विभक्ति बहुवचनान्त पद 'धूमैः' के विशेषण हैं।

अभ्युत्थिता...अभ्युत्थिताः (अभि उत् धातु स्था क्त) अग्नयः इति (कर्मधारय), अभ्युत्थिताग्नीनां (षष्ठी तत्पुरुष), तैः। प्रज्जवलित होमाग्नि को सूचित करने वाला धुआँ। अभ्युत्थित- उठी हुई अर्थात् प्रज्जवलित, पिशुनैः - सूचक।

आहुतिगन्धिभिः आहुतीनां गन्धः इति आहुतिगन्धः (षष्ठी तत्पुरुष), आ धातु हू क्तिन्- आहुति। आहुतिगन्धः एषां अस्ति इति आहुतिगन्धिनः (बहुव्रीहि) तैः, आहूतिगन्ध-इनि। जली हुई घी, दही आदि हविष्य की सामग्री की गन्ध जिनमें से आ रही है ऐसा धुआँ।

पवनोद्धूतैः पवनेन (वायु से) उद्धूतैः (उड़ाए हुए धूएँ से), तृतीया तत्पुरुष। उद्धूत उत् धातु धू क्त, आश्रमोन्मुखान् उद्गतानि मुखानि येषां ते उन्मुखाः (बहुव्रीहि), आश्रमस्य

उन्मुखाः (षष्ठी तत्पुरुष), तान्। अतिथीन् का विशेषण। आश्रम की ओर आते हुए अतिथियों को। स आश्रमोन्मुखाः का अर्थ है आश्रम की ओर जाने के उत्सुक। इसलिए उद्गत का दूसरा अर्थ है 'उत्सुक'

पुनानम् पवित्र करता हुआ, आश्रम का विशेषण। धातु पू शानच्। यज्ञाग्नि धूम से आन्तरिक एवं बाह्य वातावरण की पवित्रता होती है। इस प्रसंग से यज्ञ, यज्ञाग्नि एवं तज्जन्य धूम की महिमा अथवा गरिमा की ध्वनि प्राप्त होती है। रघुवंश में भी शुद्ध करने वाली अग्नियों का उल्लेख मिलता है।

''त्रेताग्निधूमाग्रमनिन्द्यकीर्तेः तस्येदमाक्रान्तविमानमार्गम्।

घ्रात्वा हविर्गन्धि रजोविमुक्तः समश्नुते मे लघिमानमात्मा।। (13.37)